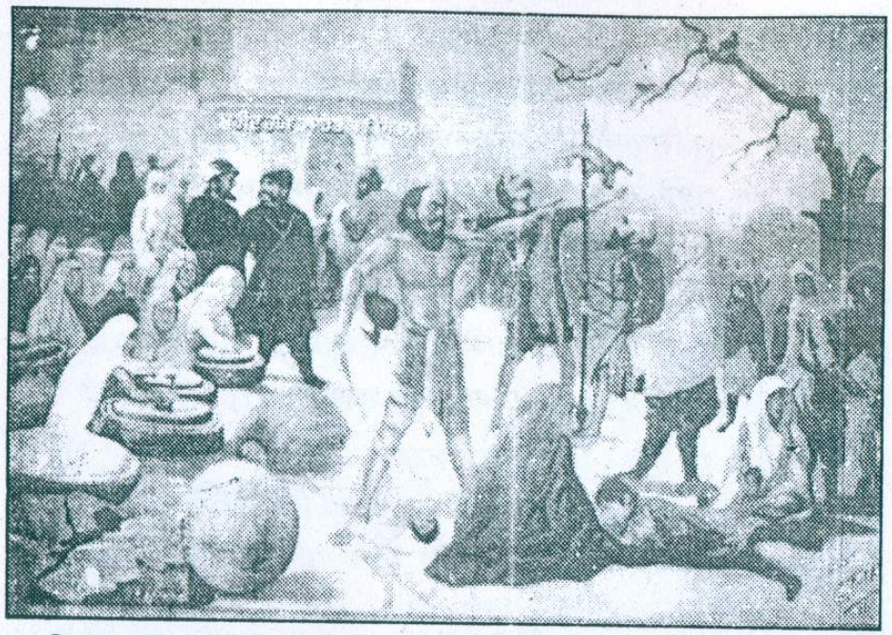

सिरव इतिहास जो कुबनीयों का इतिहास हैं । इस इतिहास का एक एक पन्ना शहीदों के खून से रंगा हुआ है । इतना ही नही, इस इतिहास का एक बडा सा हिस्सा सिंघनियों (सिख स्त्रीयों) तथा बच्चों की कुर्बानियों से भरा हुआ है । सिंघनियों का उस समय का सब्र और भरोसा शरीर के रोंगटे खडे कर देने वाला है । अपने धर्म को बचाने की खातिर मुगलों द्वारा किये गये अत्याचार को सहन तो किया ही मुगलोद्वारा किये गये अपने बच्चों के टुकडे टुकडे को अपने आंचल में डलवाए लेकिन अपने धर्म और भरोसे को आंच नही आने दी ।

शहीद गंज लाहौर इसी सब्र का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

पुस्तको के लिये संपर्क करे

तारासिंघ गोरोवाडा

सिख धर्मप्रचार कमिटी, पुणे.

१०३७, धनकवडी, पुणे - ४११ ०४३.

मेरी पाकिस्तान यात्रा

लेखक :

तारासिंघ गोरोवाडा

प्रकाशक :

तारासिंघ गोरोवाडा

सिख धर्मप्रचार कमिटी, पुणे

१०३७, धनकवडी, पुणे - ४११ ०४३.

फोन - (कार्या.) २६६९६६२१ (निवास) २४३७५२९६

मोबाईल : ९८२२८६७७७८

विनामूल्य

सरदार जसपालसिंघ
सरदार महिंद्रसिंघ गांधी
परिवार की तरफसे मेरी
पाकिस्तान यात्रा पुस्तक का
पूरा खर्च दिया है ।

सिख धर्म प्रचार कमिटी, पुणे
उनकी आभारी है ।

मेरी पाकिस्तान यात्रा

जब कोई असंभव घटना अचानक घट जाये, जो बात कभी सपने मे भी सोची न हो वो बात बन जाये, तो सचमुच बडी खुशी होती है । ऐसी ही घटना, मेरी जीवन में घटी । मेरा जन्म विभाजन से पहले पश्चिम पंजाब कादरांबाद में हुआ था । (अब ये स्थान पाकिस्तान में है) देश बंटवारे के समय हमारा पूरा परिवार पूना में आकर बस गया । बचपन गया, जवानी बीती, बुढापा यहीं पर आ गया । दिल में बडी तमन्ना थी की, एक बार अपनी जन्म भूमि के दर्शन करूँ, पर ये असंभव बात लगती थी ।

अचानक एक दिन मेरे मझले बेटे, सरदार इकबालसिंह ने बताया कि एक जत्था पाकिस्तान तीर्थ दर्शनो के लिये जा रहा है । अगर आपकी इच्छा हो तो फार्म भर दो । अंधा क्या मांगे **'दो आखें'** की कहावत अनुसार दिल बाग बाग हो गया । जब पुत्र ने कहा कि पासपोर्ट भी लगेगा तो दिल फिर से ढह गया, क्यों कि पासपोर्ट मिला नहीं था । कहते है परमेश्वर की कृपा हो तो असंभव भी संभव हो जाता है, हुआ भी यही । पासपोर्ट के ऑफिस में जाकर पूछताछ की तो बात बनती नजर आई । ऑफिस में कागजो की पूर्तता करने पर पासपोर्ट मिल गया । फार्म भरकर दे दिया गया । हमारी खुशकिस्मती थी कि पाकिस्तान जाने की मंजूरी भी मिल गई ।

कई दिनों की प्रतिक्षा के बाद वो शुभदिन ११ अप्रेल दिन सोमवार भी आ गया, जिस दिन हमारी पाकिस्तान यात्रा शुरू होनी थी ।उसका ब्योरा मैं नीचे दे रहा हूँ जिसमें मेरे मित्र श्री विनायकजी लिमये का मुजे बडा सहाय मिला । दोपहर के १२-३० बजे हमारा जत्था अमृतसर से बस द्वारा अटारी स्टेशन पहुंचा । भारतीय कस्टम अधिकारियों ने हमारे सामान की तलाशी ले कर हमें, समझोता एक्सप्रेस रेल द्वारा बाघा बार्डर पहुँचाया । यहाँ हमारे पासपोर्ट चेक करने के बाद हमें उसी समझोता एक्सप्रेस में बैठा दिया गया, लगभग रात को १.३० बजे के गाड़ी पंजासाहिब के लिये रवाना हुई तो **बोले सो निहाल सतिश्री अकाल** के नारों से वातावर्ण गूंज उठा, जैसे जैसे गाडी

अपनी मध्यम रफ्तार से छुक छुक करती अंधेरे को चीरती हुई आगे बढ रही थी, वैसे वैसे यात्रियों के सिर पंजासाहिब को याद करते हुए श्रद्धा से झुक रहे थे । दिलों मे अेक अनोखी सी कसक उठ रही थी, और आंखो में नई चमक सी आ रही गई थी । सुबह करीब करीब ९ बजे जैसे ही गाडी हसन अबदाल स्टेशन रूकी, उसी समय फिर **बोले सो निहाल** से धरती गूंज उठी और यात्रीयों ने पंजा साहिब की पवित्र भूमि को बडे प्यार से चूमकर, उस की धूल अपने माथे पर लगाते हुऐ अपने आपको धन्य महसूस कर रहे थें ।

गुरूद्वारा पंजासाहिब

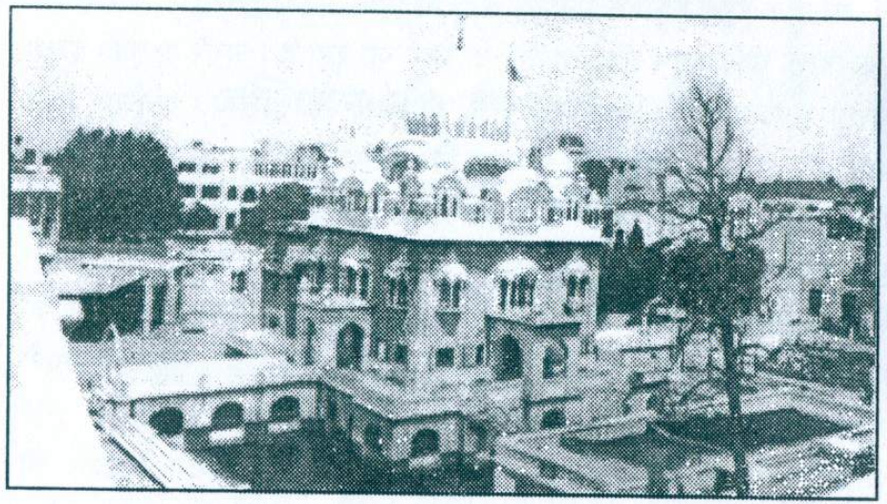

गुरूद्वारा पंजासाहिब (हसन अबदाल पाकिस्तान)

स्टेशन से एक किलोमीटर की दूरी पर गुरूद्वारा पंजासाहिब स्थित है। वक्फ कमेटी तथा वहां की संगत ने आये हुए यात्रियों पर फूल बरसा कर उनका स्वागत किया और हमने पाकिस्तानी सिपाहियों की देख रेख मे पंजा साहिब गुरूद्वारे में प्रवेश किया । अन्दर महुंचते ही एक बडा सा गलियारा नजर आया, उसके साथ में पवित्र सरोवर और सरोवर से ही लगे हुअे अपनी कलाकारी से मनमोह लेने वाले गुरूद्वारा साहिब के दर्शन हुअे ।

गुरूद्वारे के चारो तरफ बडी सी प्रदिक्षणा थी और बीचो बीच एक बडी जगह पर बने हुए गुरूद्वारे की सुंदर सी इमारत दिल को भा रही थी । चारो तरफ संगमरमर से सुशोभित गलियारो में यात्रियों के रहने के लिये कमरे थे। कमेटीद्वारा व्यवस्था बडी सुंदर की गई थी ।

पंजासाहिब की कहानी....

कहते है ये वो पवित्र स्थान है, जहां गुरूनानक देवजी ने वली कंधारी नामक एक बली का अहंकार निवारण किया था, जो अहंकार में अपने आपको बडा पीर समझ रहा था । जिस पहाड़ी पर वो रहता था उस पहाड़ी पर एक कुदरती पानी का झरोखा था उसके पानीद्वारा वे वहां की जनता पर अपना रोब जमाता था । क्योंकि पानी और कहीं भी नहीं था।

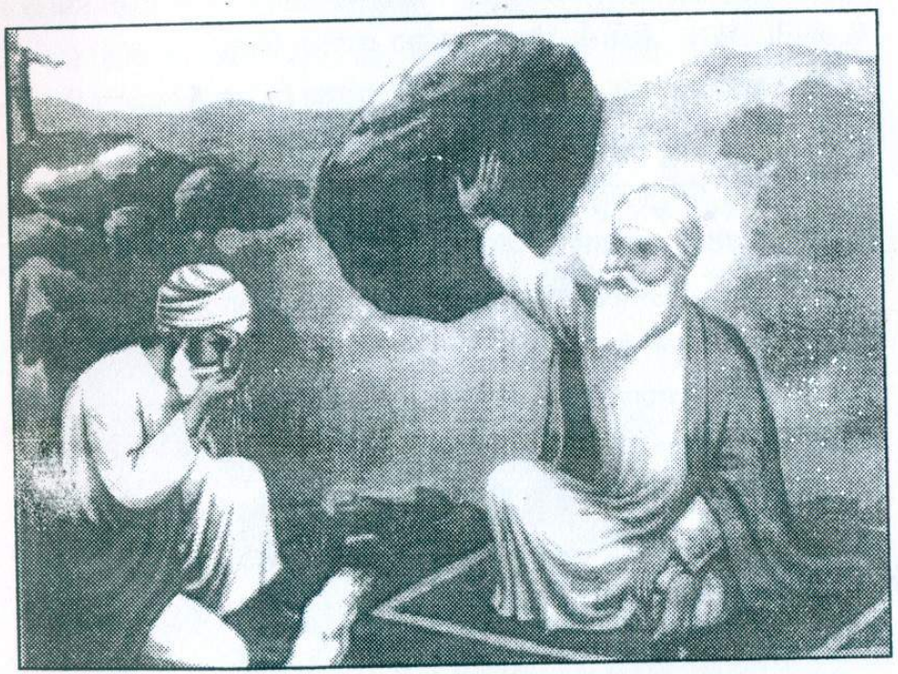

गुरू नानक देवजी ने अपने हाथ के पंजे द्वारा शिला वही रोक दी

कहते है गुरूनानक देवजी अपनी पद यात्रा करते हुए वहाँ पहुंचे । गर्मी के दिन थे । गुरूजी के शिष्य मर्दाना को पानी की बड़ी प्यास लगी थी । गुरूजी ने अपने शिष्य मर्दाने को वली कंधारी के पास जा कर, पानी पीने के लिये कहा । लेकिन वली कंधारी ने पानी देने से मना कर दिया और ताना मारा जिस गुरू का तू शिष्य है, वो तुम्हें पानी नहीं पिला सकता। तीन बार जा कर पानी मांगने पर भी जब वली कंधारी ने पानी नहीं दिया तो मर्दाना प्यास से व्याकुल होकर गुरूजी से कहने लगा । पातिशाह मैं प्यासा मर जाऊंगा, लेकिन अब वली कंधारी के पास पानी मांगने नही जाऊंगा। गुरूजी हसंकर बोले मर्दानिया करतार का नाम लो और जल पी लो । गुरूनानक ने नजदीक ही रखी ईंट को उठाने के लिये मर्दाने से कहा । जब मर्दाने ने वे ईंट उठाई तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा । क्योंकि इस ईट के नीचे से निर्मल पानी की गंगा बह रही थी । मर्दाने ने पानी से अपनी प्यास बुझाली और ईश्वर का शुक्राना किया।

उधर थोडे समय के बाद वली कंधारी ने देखा कि उसका इकठा किया हुआ, झरने का पानी कम होता जा रहा है । तब उसने नीचे देखा तो उसे नीचे पानी की गंगा बहती नजर आई । इस कौतुक को देखकर वलीकंधारी क्रोधित हो उठा । अहंकार मे अंधा होकर उसने एक बड़ी सी शिला को जहां गुरूजी तथा उनका शिष्य मर्दाना बैठे थे, उस दिशा की तरफ ढकेल दी, ताकि इस शिला के नीचे गुरू शिष्य दोनों ही दब जाये । लेकिन खुदा को कुछ और ही मंजूर था । उस शिला को नजदीक आते देख कर गुरू नानकदेवजी ने अपने हाथ के पंजे द्वारा शिला वही रोक दी । उस दिन से आज तक निरंतर शिला वहीं खडी है उस पर पंजे का निशान बना हुआ है और जहां से वे ईट उठाई थी, वहां से आजतक पानी बह रहा है । इस प्रकार गुरू नानकदेवजी ने वली कंधारी का अहंकार तोड़ा और जनता के लिये पानी की उपलब्धता की । कहते है अग्रेंजो के जमाने मे उस पंजे के निशान को मिटाने की और पानी को बंद करने के बहुत से प्रयत्न किये गये, लेकिन आज तक किसी को भी ये सफलता नहीं मिली । पानी का

प्रवाह निरंतर चल रहा है, और पंजे का निशान आज भी बना हुआ है । इसी लिये इस जगह का नाम पंजासाहिब पड़ गया । पास ही में वली कंधारी की पहाडी है, जिसपर वे रहता था । इस पहाडी की चढाई लगभग चार किलो मीटर लंबी उबड खाबड रास्ते वाली है ।

पंजासाहिब में घटी घटना ....

कहते है गुरू के बाग से लंगर के लिए सुखी लकडियाँ ला रहे सिखों के जत्थे को अंग्रेज अधिकारीयों ने लाठीयों से मार मार कर अधमरा कर दिया था । एक तरफ लाठीओं की बौच्छार थी, तो दूसरी तरफ सबर का नारा **'सति श्री अकाल'** था । जखमी सिघों को लारियो पर लादकर अमृतसर लाया गया और रेल्वेद्वारा अटक जेल के लिये भेज दिया गया । जब पंजासाहिब की संगत को पता चला की कई दिनो के भूखे प्यासे सिघों को कैदी बना कर ले जा रहे है तो उन्होने जख्मी कैदी सिघों को लंगर छकाने के लिये रेल्वे स्टेशन मास्टर को, गाडी रोकने के लिये कहा तो स्टेशन मास्टर ने जवाब मे कहा **मेरे मालिक का हुक्म है कि गाड़ी यहां नहीं रूकेगी** । इस पर जत्थेदार भाई करमसिंघ और भाई प्रतापसिंह ने कहा अगर तेरे मालिक का हुकुम गाडी नही रोकने का है तो **मेरे मालिक 'अकाल पुरूख'**

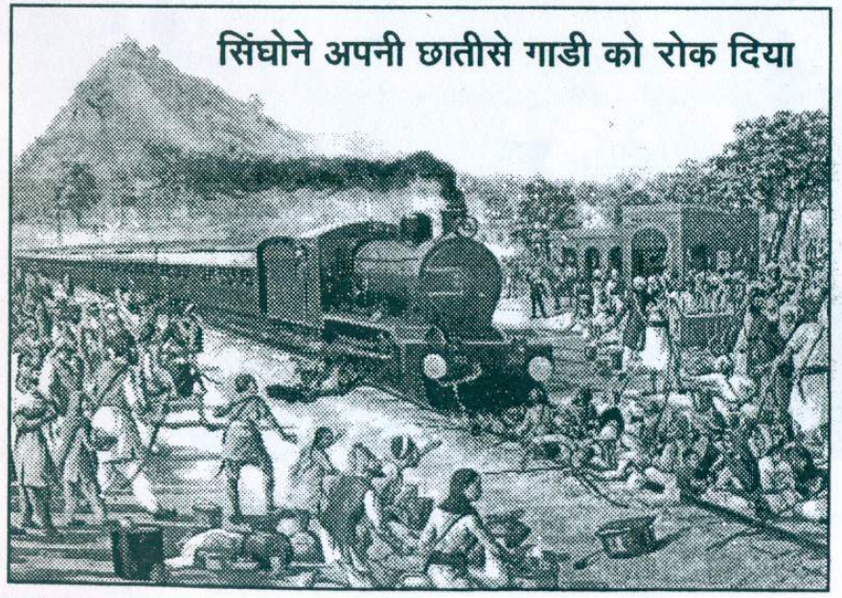

वाहिगुरू का हुक्म है कि गाड़ी यहां रूकेगी । सन १९२२ अक्टूबर की ३१ तारीख को दोनो जत्थेदार रेलवेलाईन पर लेट गये और गाडी उनकी छाती को चीरती हुई कई कदम आगे जा कर रूक गई । इस प्रकार इन शहीदों ने अपनी छातीयो द्वारा गाड़ी को रोका और संगत ने उन भूखे प्यासे सिघों को लंगरछकाया । गाड़ी यहां ढेड घंटा रूकीरही । इस कांड में दोनों जत्थेदार शहीद हुअे और छः सिंघ जख्मी हो गये थे। इस इतिहासक कहानी की कोई भी निशानी नहीं है ।

पंजासाहिब से तीसरे दिन हम सभी यात्री रात के दस बजे फिर समझोता एक्सप्रेस पर बैठ गये और सुबह ९ बजे **जैकारो की गूंज** के साथ हम सभी गुरूद्वारा ननकाना साहिब की पवित्र धरती पर पहुंचे ।

गुरूद्वारा ननकाना साहिब

गुरूद्वारा जन्मस्थान गुरू नानकदेवजी ननकाना साहिब की विशाल इमारत, सिख कला का अनूठा नमूना

ननकाना साहेब ये उस पवित्र धरती का नाम है । जहां पर सन १४६९ में पिता श्री कल्याणजी तथा माता तृप्ताजी की कोख से गुरू नानक का जन्म हुआ था । इस गांव का पुराना नाम रायभोई की तलवंडी था । गुरू नानकदेवजीके आगमन से उनके नामसे ननकाना साहिब प्रसिद्ध हुआ । गुरूद्वारे के बाहरी गेट से अंदर पहुंचते ही रास्ते के बीचो बीच हरियाली से तथा अनेक प्रकार के सुंदर फूलों से भरा हुआ बडा ही सुंदर सा बगीचा है । जिसे देखते ही मन के फूल खिल उठते हैं । बगीचे के सामने ही गुरूद्वारा जन्म स्थान है । जहां पर गुरू नानकदेवजी का जन्म हुआ था । वहां पर अब श्रीगुरू ग्रंथसाहिब जी का प्रकाश होता है । गुरूद्वारे की इमारत मन को मोह लेती है । यहां का वातावरण शाम को बडा ही सुहावना बन जाता है, जब रंग बिरंगी लाईट फुहारों पर पडती है तो ऐसा लगता है मानो स्वर्ग में बैठे हों ।

गुरूद्वारे के अंदर कदम रखते ही बायें हाथ पर उन ८६ शहीदों के नाम दर्ज हैं जो अपने पर हुए जुल्म की कहानी कहते हैं। जब महंत नारायणदास इस गुरूद्वारे की जायदाद को अपनी निजी संपत्ती समझ कर एय्याशी में इसके इस्तेमाल करने लगा तभी इस गुरूद्वारे को गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकार में लाने के लिये २० फरवरी सन १९२१ को ननकांनासाहिब गुरूद्वारे को महंत नारायणदास के हाथों से आजाद कराने के लिये, आये हुए शांतमयी सत्याग्रहीयों को नारायण दासने स्वार्थी भावना से, तथा अग्रेंजो की मदद से पहले से ही किराये के खरीदे हुए गुंडो और बदमाशों द्वारा गोलियों, कुल्हाडियो, गडांसो, छुरियो तथा और घातक हथियारोंद्वारा बडी बेरहिमी से सत्याग्रहीयों कत्ल कर दिया । कईयों को पेड़ो से बांधकर मिट्टी का तेल डाल कर जिंदा जला दिया और उनकी अधजली लाशों को पासही बने कुऐं में डाल दिया गया । आज भी वो पेड (जंड) और वो कुँआं मौजुद है जो नारायणदास द्वारा किये गये जुल्म की कहानी को बता रहे है ।

कहते है यहीं पर गुरूजी ने ननकानासाहिब में अपने जीवन के ३५ वर्ष व्यतीत किये । इसी स्थान पर गुरूजी ने अपनी उम्र के नौवें वर्ष पंडित

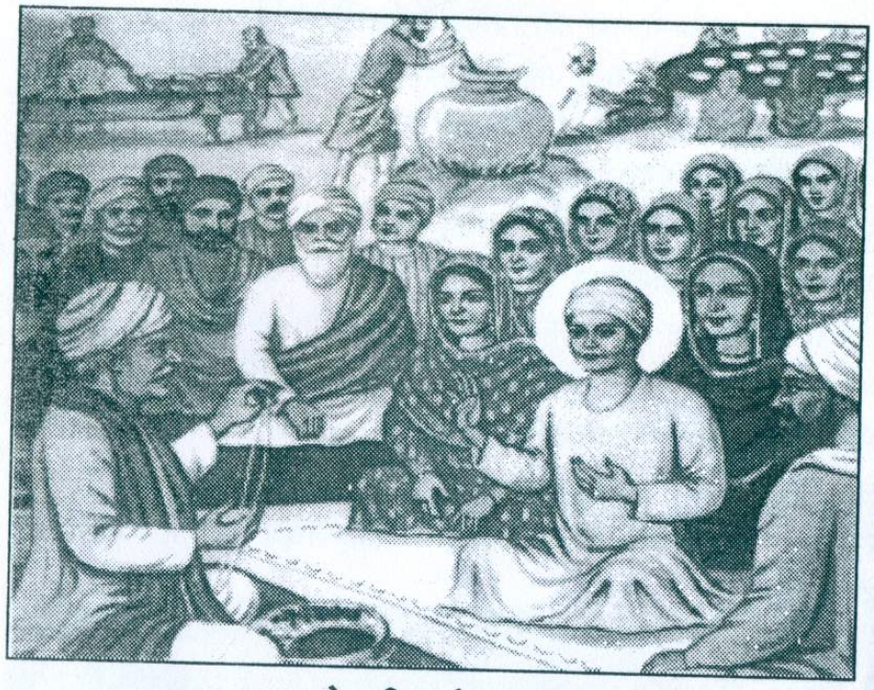

गुरू नानकदेवजी जनेऊ को नाकारते हुअे

हरदिआलजी से जब जनेऊ की रस्म करने के लिये आये तो गुरूजी ने उस जनेऊ को पहनने से इनकार कर दिया क्योंकि ये जनेऊ को पहनने का अधिकार शुद्रोंको नहीं था । मानव जाती में भेदभाव निर्माण करता है, शुद्र इसे पहन नहीं सकता था । उसी प्रकार ब्राह्मण के लिये रेशम का सात धागों वाला जनेऊ, क्षत्रियो के लिये सूत का पांच धागों वाला जनेऊ, और वैष्णवो के लिये उनका तीन धागों का जनेऊ पहनाया जाता था। इस पर गुरूजी ने फर्माया मुझे तो ऐसा जनेऊ चाहिए .....

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंडी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पांडे घतु ॥ पन्ना ४७१

सिख इतिहास के अनुसार २१ मई १४८७ को गुरू नानकदेवजी का विवाह बटाले के मूलचंद खत्री की सुपुत्री सुलखणी से हुआ । गुरूजी अपनी उम्र के बावीसवें साल सन १४९१ गुरूनानक जी कई दिन चुपचाप (गुमसुम) से किसी से बात नही, खाना पीना नहीं ।वैद्य को बुलाया गया वैद्य ने

नब(नाडी) देखी सब ठीक ठाक था ।नानकजी बिलकुल निरोगी थे । वैद्य ने गुरूजी से पूछा क्या रोग है । आपको क्या तकलीफ है, कौनसी दवाई दूं । वैद्य की घबराहट देखकर गुरूजी ने फरमाया मुझे कोई शारिरिक तकलीफ नही है, हा! दिल में एक एसा दर्द हैं जिसकी तुझे पहचान नही । गुरूजीने यही पर ये वाणी का उचारण किया **भोला वैदु न जाणई करक करेजे माहि**

यही पर उनका मिलाप भाई मर्दाना से हुआ । जिसने गुरूजी का अेसा साथ निभाया कि ४७ साल तक बाणी गाता और सुनता रहा । कहते है इस गुरूद्वारे के नाम पर १८ हजार एकर जमीन और नौ हजार आठसौ ब्यानवे रूपये की जागीर थी । यहां पर पचीस सिख परिवार रहते है और प्रति दिन श्री गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है।

गुरूद्वारा छावनी निहंगसिघा

गुरूद्वारा ननकांनासाहिब से सौ कदम की दूरी पर बाये हाथ की तरफ गुरूद्वारा छावनी निहंगसिघां है । यही वो स्थान है । जहां अमृतसर से आये हुए जथे ने महंत नारायणदास को हटाने और गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के ताबे मे गूरूद्वारा देने के लिये शांतमई सत्याग्रह किया था, और महत

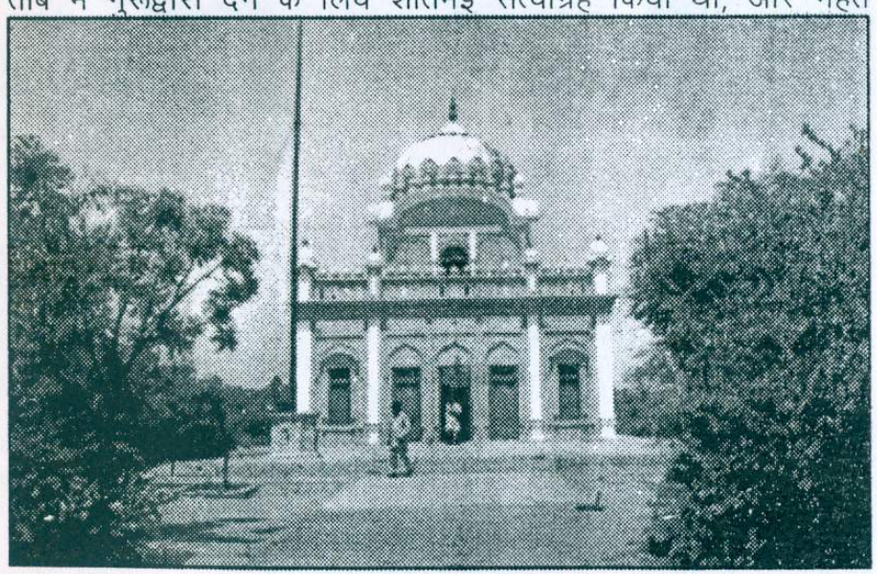

गुरूद्वारा तंबूसाहिब (ननकांना साहिब)
हरियाली की गोद में खडी इमारत

नारायणदास ने स्वार्थी भावसे उन्हे शहीद कर दिया था ।

गुरूद्वारा तंबूसाहिब (ननकांनासाहिब)

इस गुरूद्वारे से पचास कदमों की दूरी पर गुरूद्वारा तंबुसाहिब है । जब गुरूनानक जी चुहडकाणा में २० रू का भूखे साधुओं को लंगर छकाकर सच्चा सौदा, कर के लौटे तो घर न जाकर यही पर कुछ समय के लिये रूक गये । जब मेहता कालू अपने पुत्रपर नाराज हुए तो गुरूजी ने कहा पिताजी मैं तो आपकी पूंजी को शुभ कार्य में लगा आया हूं । गुरूजी जब यहा आऐ उस समय इस स्थानपर बेरी के बहुत से पेड थे जिनका फैलाव तंबू जैसा नजर आता था । इसलिये इसका नाम तबुंसाहिब गुरूद्वारा पड गया चारो तरफ पेडों की हरियाली है । यहा पर श्री गुरूग्रंथ साहिब का प्रकाश नही होता । यात्रा के समय दर्शनों के लिये इस गुरूद्वारे का दरवाजा खोला जाता है ।

गुरूद्वारा बाललीला की विशाल इमारत (ननकानासाहिब)

गुरूद्वारा बाललीला (ननकांनासाहिब) ....

इसी गुरूद्वारे की सामने वाली गली में गुरूद्वारा बाललीला है । जहां पर गुरूजी बचपन में खेला करते थे और खेलते खेलते अपने सहयोगीयों के मन में प्रभु नाम का प्रकाश उत्पन्न करते थे । यही पर नानकसर नामक सरोवर है, जो अब सूखा पडा है । इस गुरूद्वारे के नाम पर १२० मुरबे जमीन और कुछ जागीर भी थी । अब ये गुरूद्वारा पाकिस्तान वक्फ बोर्ड के हाथ है यहाँ पर श्री गुरूग्रंथ साहिब के प्रकाश का प्रबंध नहीं है । सिख यात्रियो के आने पर ही इस को दर्शनो के लिये खोला जाता है इमारत सुंदर और सुरक्षित है ।

गुरूद्वारा पट्टी साहिब (ननकाना साहिब)

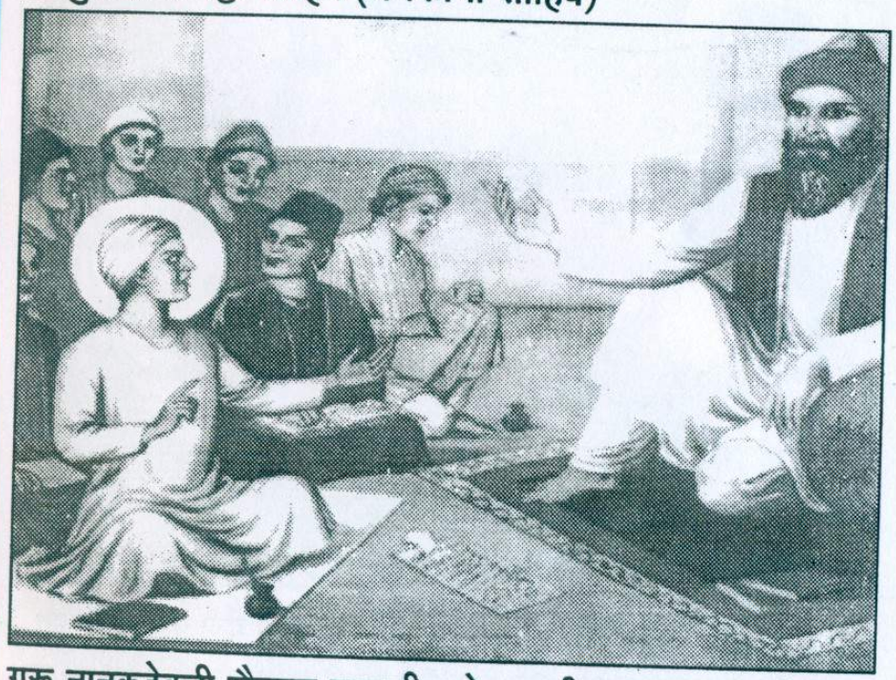

गुरू नानकदेवजी मौलाना कुतबुदीन से फारसी ज्ञान प्राप्त करते हुए ।

गुरूद्वारा बाललीला के दाये हाथ पर बिल्कुल १०० गज के अंतर पर गुरूद्वारा पट्टीसाहिब है जहाँ पर गुरूजी सात सालकी उम्र मे पंडित गोपालदास से हिंदी पढ़ते थे । बाद में पंडित ब्रिजलाल से संस्कृत सीखी और तलवंडी के ही मौलणा कुतबुदीन से फारसी का ज्ञान प्राप्त किया । गुरूजी के

आत्मीज्ञान और उनके रोशन दिमाग के सामने तीनों उस्तादों को अपनी बारी बारी से सर झुकाने पड़े । गुरूजी प्रचलित पढाई का विरोध करते थे विद्याका असल रूप दिखाते हुए उन्होने हर अक्षर का अर्थ अध्यात्मिक द्वारा दिया, जिस विद्यासे वह बचपन से ही मालामाल थे । यहीं पर गुरूजी ने आसाराग मे पट्टी नाम की बाणी का उच्चारण किया, जो श्री गुरू ग्रंथसाहिब में पन्ना ४३२ पर अंकित है । कुछ समय से यहाँ पर, श्री गुरू ग्रंथसाहिबजी में का प्रकाश होता है । इमारत विशाल और सुरक्षित है ।

गुरूद्वारा किआरा साहिब (ननकानासाहिब)

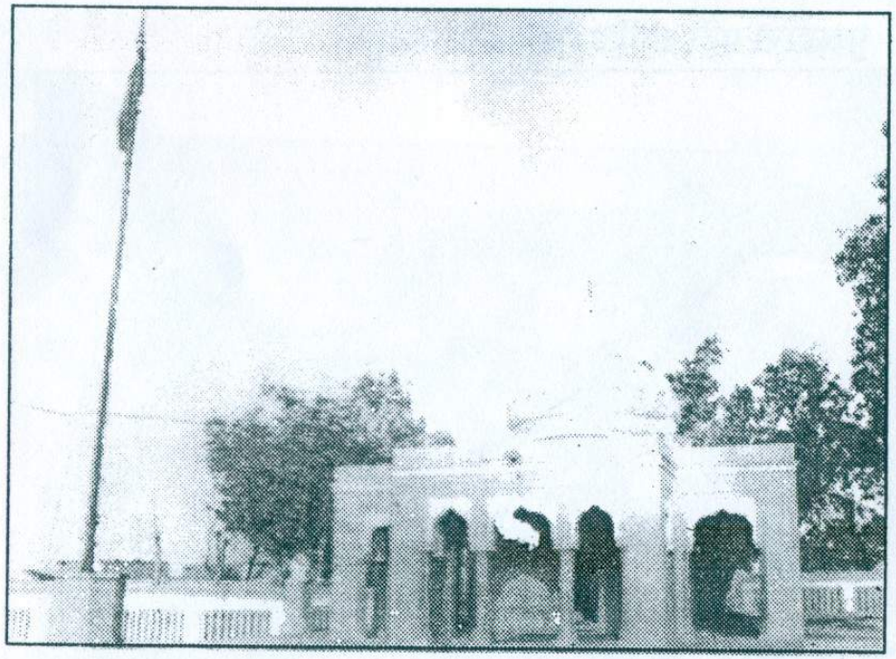

गुरूद्वारा जन्मस्थान से ये कोई ढेड़ किलो मीटर की दूरी पर है । कहते है गुरूजी अपने बचपन में एक दिन गाय भैंसे चराते हुए बाहर खेतो की तरफ चले गये । पेड़ की ठंडी छाया में बैठे हुए परमेश्वर से स्मिृती जुड गई। इसी समय गुरू नानक की गाय भैंसे नजदीक के एक खेत मे घुस गई और फसल को उजाड़ दिया। खेत के मालिक ने जब उजड़ा हुआ अपना खेत देखा तो गुस्से से चिल्लाने लगा । आवाजसे गुरूजी की आंख खुल गई तब गुरूजी ने

अपनी गाय भैंसो को घर की ओर हांक दिया और बडे प्यार से खेत की तरफ देखा तो किसान का खेत हर-भरा हो गया ।खेत का मालिक गांव के मुखिया रायबुलार को साथ ले आया तो ये देखकर हैरान हो गया कि उजड़ा हुआ खेत, हरा भरा कैसे हो गया इस कौतुक को देखकर हिंदु मुस्लिम के दिलो में गुरूजी के प्रती आदर और भी बढ़ गया ।

गुरूद्वारा मालजीसाहिब (ननकाना साहिब) ....

धूप के समय फनियर नाग ने आकर गुरूजी के मुखमंडल पर छाया कर दी

इसी रास्ते के वापसी पर जन्म स्थान को ओर जाते हुए गुरूद्वारा मालजीसाहिब है। ये स्थान गुरूजी के बचपन से संबंध रखता है और कहते है गुरूजी बचपन में एक दिन धूप के समय गाय भैंसे चराते हुए एक पेड के नीचे बैठे हुए प्रभुके चरणों मे लीन के पेडो की छाया ढलने लगी तो उनके मुख मंडल पर धूप आ गई । उस समय एक फनिअर नाग ने आकर अपने फन से उनके मुखमंडल पर छाया कर दी । दूर से गांव के मुखिया रायुबुलार ने देखा तो वो सशंकित हो गये कि कहीं गुरूजी को सॉपने डस न लिया हो।

जब नजदीक पहुंचे तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा, गुरूजी सही सलामत थे । इस कौतुक को देखकर रायबुलार उनकी अध्यात्मिक अवस्था को जान गये और उनका आदर करने लगे । उन्होंने अपने पटवारी मेहताकालु से कहा नानक को केवल अपना पुत्रही न समझना वो खुदा की दरगाह का वली है ।

ये गुरूद्वारा ननकानासाहिब की घनी आबादी में बना हुआ है । इस ऐतिहासिक स्थान का गुरूद्वारा बड़ा सुंदर और विशाल है । श्री गुरूग्रंथ साहिब के स्थान पर गुरुजी की तसवीर सिख यात्रीयों के आनें के समय रख दी जाती है । इस वन के पेड यहाँ की कौतुक भरी कहानी को दर्शाते हैं ।

गुरूद्वारा रोडी साहेब ....

गुरूद्वारा ननकानासाहिब से करीब ६० किलो मीटर की दूरी पर ऐमना बाद में गुरूद्वारा रोडीसाहिब हैं । कहते है गुरूनानक देवजी अपनी उदासी (पदयात्रा) के समय यहा पर आ कर ठहरे थे । यहीं रोडी (बारीक पत्थरो) पर बैठकर प्रभु के चरणों मे लीन हो जाते थे । इसी लिये इस गुरूद्वारे का नाम रोडीसाहिब पड गया । इस गुरूद्वारे की ख्याती है कि गुरूद्वारे की कारागिरी दुनिया के बेहतरीन कारीगिरी का नमूना है । यहा के सरोवर का नमूना अपने आपमें अनूठा है । आज ये सरोवर सुखा पड़ा है । यहां पर श्री गुरू ग्रंथ साहिबजी का प्रकाश नही होता ।

इस गुरूद्वारे से तीन चार किलो मीटर की दूरी पर भाई लालो की खुई (कुआँ) के नाम से प्रसिद्ध, भाई लालो का घर है । ये वो श्रद्धालु गुरूजी का सिख है, जिसके घर गुरू नानकदेवजी ने कुछ दिन ढहरे थे । भाई लालो एक मेहनती ईमानदार लकडी का काम करने वाला तरखान (बढ़ई) था । एक दिन इसी गाव का तहसीलदार मलक भागो ने अपने गृह में यज्ञ किया और उस यज्ञ पूर्ती पर इस गाँव, और आसपास के गाव के रहिवासियों तथा साधुसंतो को खाने का न्योता दिया । उसने गुरूजी को भी न्योता दिया, लेकिन गुरूजी नहीं गये । बार बार मलकभागो के बुलाने पर गुरूजी ने कहा कि ये खाना गरीबों के खून पसीने से बना

भोजन नही करना चाहता । मलकभागो द्वारा गुरूजी की बात को बार बार झुठलाने पर गुरूजी ने भाईलालो को अपने घर से रोटी लाने के लिये कहा। रोटी आ जाने पर एक हाथ में भाई लालो की रूखी सूखी रोटी और दूसरे हाँथमें मलकभागो के पकवान को लेकर दोनों हाँथों को दबाकर निचौड़ा तो भाईलालो की रोटी से दूध की धारा और मलकभागो के पकवान से लहू की धारा बहने लगी। जिसे देखकर गुरूजी ने मलक भागो को उपदेश दिया। मलकभागो जनता अपने पुत्रों के समान होती है, उस से प्यार करना चाहिए, जुल्म नही करना चाहिये । मलक को जनता की भलाई करने को कहकर मलकभागो का उद्धार करते हुए गुरूजी वहाँ से चल दिये ।

मलकभागो और भाई लालो

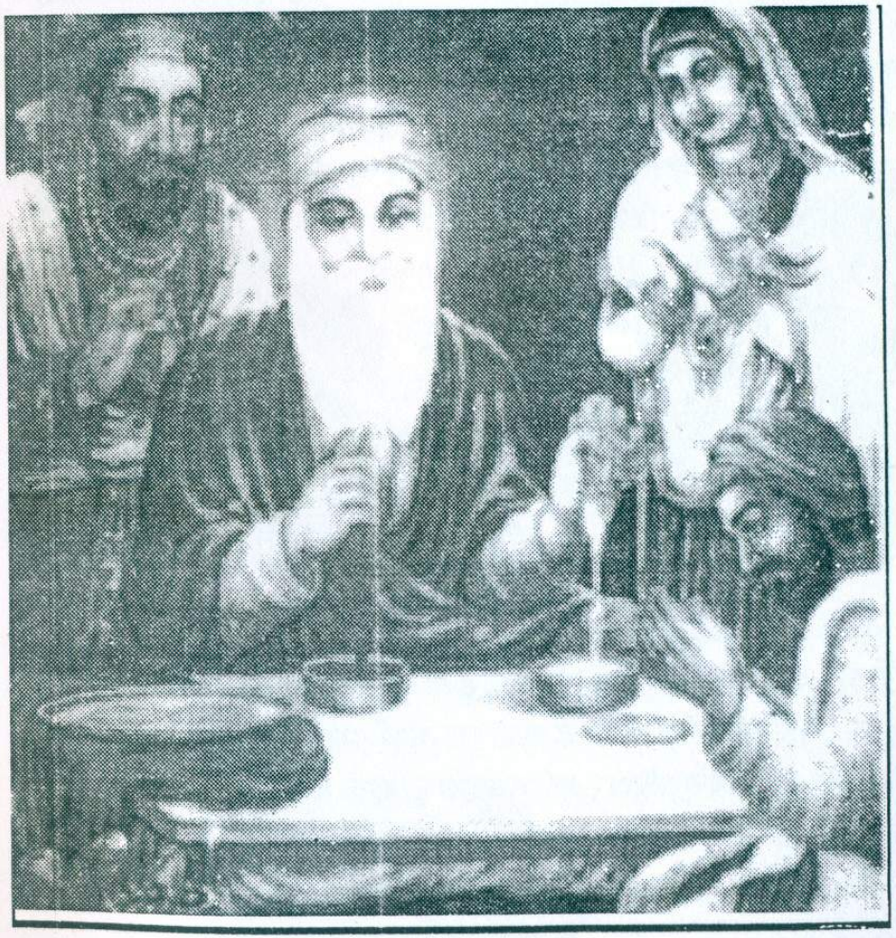

गुरूद्वारा चक्कीसाहिब (ऐमनाबाद)

इसी गांव ऐमनाबाद में जब मुगल सम्राट बाबर ने अपना दबदबा बढाने के लिये हमला किया तो उसके सैनिक अत्याचार और लूटमार तो कर ही रहे थे, साथ ही साथ गांववासियों को बंदी भी बना रहे थे। उन्ही दिनों गुरू नानकदेवजी भी इस गांव में थे, उन्हे भी बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया, और कैदियों के हाँथ से चक्की द्वारा आटा पिसाया जाने लगा। जब बाबरके सैनिक कैदियों का निरक्षण करने आये, तो उन्होने देखा, गुरूजी प्रभु नाम में मस्त है; और चक्की स्वयं ही चल रही है, और आटा पिसा जा रहा है। ये अनोखी आश्चर्य जनक खबर तत्काल बादशाह को दे दी गयी तब स्वयं बाबर बादशाह ने देखा तो गुरू नानकदेवजी से क्षमा माँगते हुए उन्हें सन्मान सहित रिहा कर दिया। इसी पवित्र स्थान पर चक्की सहिब गुरूद्वारा बना हुआ है। साधारण सी जगह है, यहां पर श्री गुरुग्रंथसाहिब जी का प्रकाश नहीं होता। यहीसे हमारा जत्था बस द्वारा १२५ मील की

बाबर की जेल मे सिंघनिया चक्की पीसती हुई

दूरी पर कच्ची पकी सडकों से होता हुआ करीब तीन घंटे बाद करतार पुर पहुंचा। यही वो पवित्र स्थान है जहां पर चौथी पदयात्रा करने के बाद, गुरू नानकदेव जी अपने परिवार सहित रहकर, खेती बाड़ी करते थे, और आई हुई संगत को लंगर (भोजन) खिलाते तथा प्रभु की महिमा के बचन विलास करते थे। यहीं पर उनकी मुलाकात अपने शिष्य लहणा से हुई। बाद में

जिन्हें सिखधर्म के दूसरे गुरू का सन्मान प्राप्त हुआ और जो अगंददेवजी के नाम से प्रसिद्ध हुए। यहीं पर २२ सितंबर सन १५३९ को गुरू नानकदेव जी की ज्योति प्रभू में विलिन हो गई। कहते है ज्योति विलिन होने पर गुरूजी के दाह संस्कार को लेकर हिंदूओं और मुसलमानो में जंग छिड गई। हिंदु कहते थे गुरूनानक जी हमारे गुरूजी है; उनका दाह संस्कार द्वारा हिंदु पद्धती से अग्नि संस्कार होगा; लेकिन मुसलमान भी पीछे नहीं रहे, वे कहने लगे नानक हमारे पीर है, हम उनके शरीर को मुस्लिम रिवाज से धरती में दफन करेंगे। इन दोनों पक्षों के वाद विवाद मे रात बीत गई, लेकिन हल न निकला। किसी भले आदमी ने गुरूजी के अंतिम दर्शनो के लिये जरा चादर हटाई तो क्या देखता है ? कि गुरूजी का शरीर अलोप है, और उस की जगह फूलों का ढेर है। देखो कुदरत का खेल। इस प्रकार गुरूजी के अंतिम संस्कार का हल निकल गया। हिंदुओं ने आधे फूल और आधी चादर लेकर अग्नि संस्कार किया और मुस्लमानों ने यहांसे केवल बीस फुट की दूरी पर ही, उन फूलों और आधी चादर को, अपने धर्मानुसार दफनाया। इसी लिये तो लोग कहते है।

" बाबा नानक शाह फकीर हिंदु का गुरू मुसलमान का पीर"

****

गुरूद्वारा सच्चा सौदा (ननकानासाहिब)

दूसरे दिन हमारा जत्था जन्मस्थान ननकाना साहिब से बसद्वारा सच्चा सौदा के लिये तैयार हुआ। ये स्थान लाहौर से ३७ कि.मी. की दूरीपर गांव चुहडकाणा में है यही पर सच्चासौदा हुआ था। ननकानासाहिब से ये गांव४५ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हमारा जत्था सुबह नौ बजे बस पर सवार हुआ। ये बस एक दो नहीं करीब पचपन से साठ बसें थी। कोई अनुचित प्रसंग न हो इसी लिये पाकिस्तान सरकार ने सारी की सारी बसें दोपहर साढ़े बारा बजे पूरी पुलिस पलटन बंदूक धारीयों के साथ अपनी मंजिल तय करने के लिये रवाना की। कच्ची पक्की सडकों से होता हुआ ये बसो का काफिला गेहूँ की लगी हुई क्यारियों के नजदीक से होता हुआ,

गुरूजी भुखे साधु-संतो को लंगर खिलाते हुए

सच्चा सौदा के दर्शन का आतुरता से इंतजार करते हुए जा रहा था। रास्ते में वहाँ कि जनता अपनी शुभ कामनाएँ हाथ हिलाकर दे रही थी। ये दृस्य बड़ा मन को मोह लेनेवाला था। करीब ढाई बजे हमारा जत्था (चुहडकाणा) सच्चा सौदा पहुंचा। यहां का नजारा बडा ही मन मोहक था।

गुरूद्वारा सच्चा सौदा की विशाल इमारत

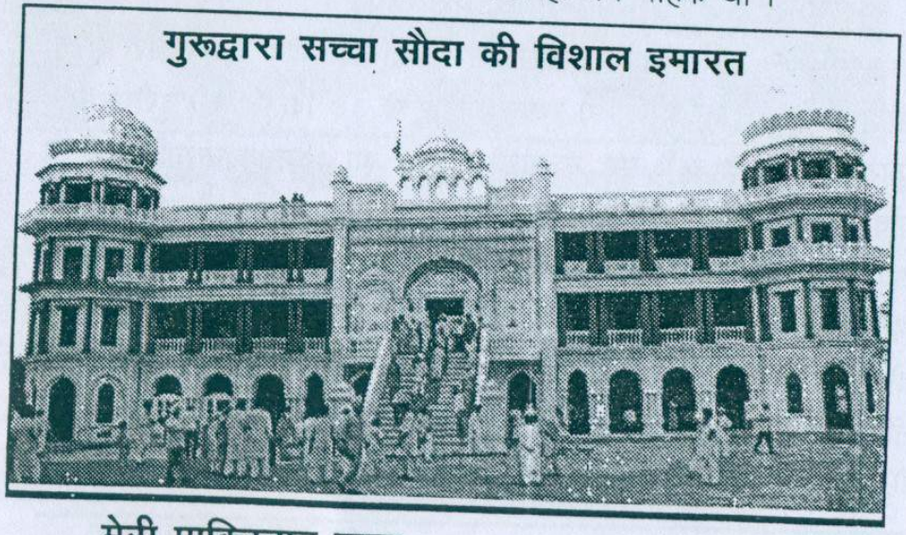

गुरूद्वारे में जाने से पहले प्रवेश द्वारबना हुआ था। वहा से अंदर दाखिल होते ही दाये हाथ मे अमरूदों का बाग था जिस में अमरूद लटक रहे थे। देखते ही मुंह में पानी आ जाता था। जरा आगे जाने पर बायें हांथ की तरफ बडा सा एक लंगर हाल था जिस में एक साथ एक हजारसंगत बैठ कर लंगर (भोज़न) छक (खां) सकती है। इन दोनों के आगे ऊंचाई पर आगे एक सुंदर सा गुरूद्वारा बना हुआ है। गुरूद्वारे की रूप रेखा मन को प्रसन्नता देती है, और अपने इतिहास की साक्षी देती हुयी कह रही है यह वो पवित्र स्थान है जहाँ पर गुरूनानक जी के पिताद्वारा, गुरूनानक को संसार विहार में लगने (रूजाने) की खातिर उन्हे बीस रूपयें देकर सच्चा सौदा करने के लिये कहा। यह वही पवित्र स्थान है जहां पर गुरूजी ने उन बीस रूपयों की भोज़न सामग्री लाकर कई दिनों से भूखे प्यासे साधु मंडळी को भोजन खिलाकर तृप्त किया। ऐसा सच्चा सौदा किया जो केवल इसी जहाँन में ही नही सन्मानित किया गया, बल्कि प्रभुके दरबार में भी सन्मानित हुआ। लगंर की यह प्रथा जो गुरू जी ने ५५० साल पहले चलाई थी वो प्रथा आज तक चल रही है और रहती दुनिया तक चलती रहेगी।

गुरूद्वारा डेहरासाहिब (लाहौर)

दूसरे दिन हमारा जत्था बसद्वारा ननकानासाहिब से लाहौर गुरूद्वारा डेहरा साहिब पहुंचा। ये फासला करीब ३०-३५ किलो मीटर का है। कभी ये स्थान महाराजा रणजीतसिंह की राजधानी रहा करती थी। ये गुरूद्वारा किलेवाला गुरूद्वारा के नाम से प्रसिद्ध है। क्योंकि ये गुरूद्वारा एक बड़े किले में बना हुआ है। यहाँ बना हुआ गुरूद्वारा क़ला का एक सुंदर नमुना है। किसीने मुझसे कहा कि इस गुरूद्वारे में पांचवे गुरू अरजनदेवजी का शहीदी स्मारक (चबूतरा) है। जब मैने हाथ जोड़ कर आँखे बदं करके माथा झुकाया तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मेरे कानों में कह रहा हो, इसी गुरूद्वारे के अन्दर पांचवे गुरू, गुरू अरजनदेव जी को वजीर चंदू ने अग्नि पर रखे तवे पर बिठाकर शहीद कर दिया था। ये वो चबूतरा है जो गुरूजी के शहादत का वारस (प्रतीक) है। सिख धर्म के पांचवे गुरू गुरू अरजन देवजी की बढती हुई शान शौकत को, बादशाह जहांगीर के मुल्ला मौलवीओं से देखा न

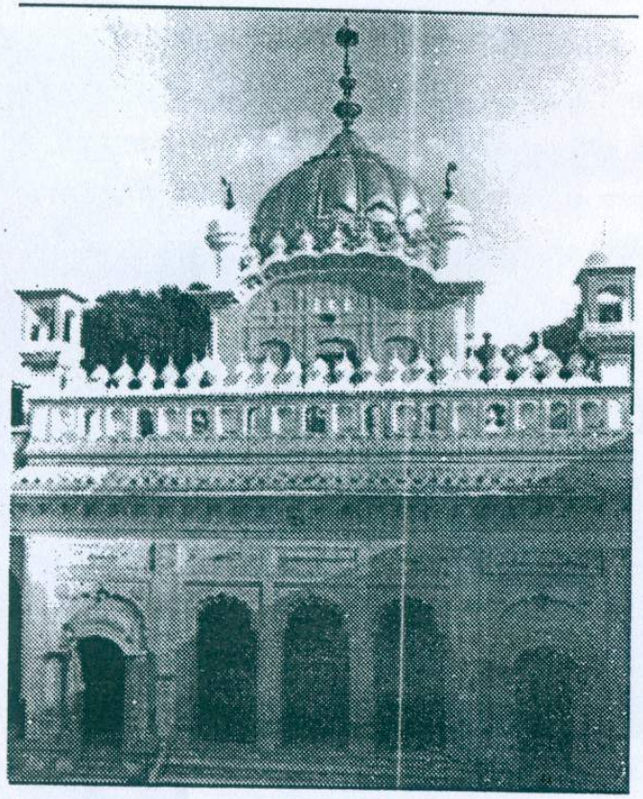

गुरूद्वारा डेहरासाहिब (लाहोर)

गया । उन्होंने बादशाह से ये झूठ कह कर उनके कान भर दिये कि सिखों के गुरू, गुरू अरजन देव जी ने आपके पुत्र शहजादा खुसरो को आपके विरूद्ध युद्ध के लिये ढेर सारी संपती, देकर स्वयं अपने हाँथों से उसे विजय का तिलक भी लगाया है ।

कच्चे कानों के बादशाह जहांगीर ने ये सुनते ही गुरूजी को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया । फौरन गुरूजी को गिरफ्तार करके लाया गया और उनके सामने बादशाहने तीन प्रश्न रखे ।

१) तुम अपने आपको गुरू कहलाते हो तो कोई करामात करके दिखाओ

२) श्री गुरू ग्रंथसाहिब मोहम्मद पैगंबर की सिफ्त (तारीफ) लिखी जाये।

३) या इन किये गये गुनाहो का दो लाख रूपये हर्जान (दंड) भरो ।

इतना कहकर इस का फैसला करने का अधिकार चंदू वजीर को देकर

बादशाह वहांसे चला गया ।

गुरूजीने पहले सवाल का जवाब वजीर चंदू को इस प्रकार दिया हम साधु वृती के लोक करतार की कृति में बाधा नही डाल सकते । इस लिये कोई करामात नही दिखा सकते हैं ।

रहा तुम्हारा दूसरा सवाल उसका यही जवाब है कि श्री गुरू ग्रंथसाहिब में सिखों के गुरू की बाणी के आशय अनुसार दुनिया में जो भी परमेश्वर को एक मानते है और जो इन्सान जात-पात रंग-रूप उँचं-नीच का विरोध करते है, जो सभी मानव जाती को, एक पिता की संतान मानते है, उन्हीं की वाणी इसमे दर्ज की गई है । इस मे केवल एक औंकार की स्तूती की जायेगी । रहा आपका तीसरा सवाल २ लाख जुर्माना भर कर छूट जाने का । मेरे पास जो भी पूंजी जमा होती है वे रूपये जनहित के लिये है और उसे मैं अपने स्वार्थ पर नही लगा सकता । आगे जो करतार (ईश्वर) को मन्जूर हो ।

उन तीनों सवालोंका जबाब जब चंदूने सुना तो, उन्होने गुरू अरजनदेव जी को सलाह दी । तुम्हारी जान बच सकती है, अगर मेरी बेटी को अपनी बहू बना लो, तो मै तुम्हारे सारे गुनाह माफ कर दूंगा । इस पर गुरूजी ने कहा पहले भी आपने साधसंगत का अपमान किया है जिसके द्वारा ये रिश्ता नाकारा गया था । आज भी मैं साधसंगत की बात भगवान का हुक्म समझ कर मानता हू और इस रिश्ते को नकारता हूं । इस जवाब को सुनते ही चंदू वजीर आगबबूला हो गया और गुरूजी को उसी समय अग्नि के भट्टे पर रखे हुए तवे पर बिठाकर ऊपर से गर्म रेत डाल कर मृत्यु दंड देने का हुक्म दे दिया इस प्रकार वजीर चंदू ने अपनी स्वार्थ भावना से गुरूजी पर अत्याचार करके उन्हें मृत्युदंड दे दिया । जब जल्लाद उन्हें तवे पर बिठा कर ऊपर से गर्म रेत डाल रहा था, तो गुरू अरजनदेवजी अडोल बैठे प्रभुकी मर्जी में राजी कह रहे थे **"तेरा भाणा मीठा लागे"**

इस प्रकार ३० मई १६०६ को गुरूजी ने शहादत प्राप्त की

इस कहानी को सुनकर मेरा दिल दहल गया, और कह उठा

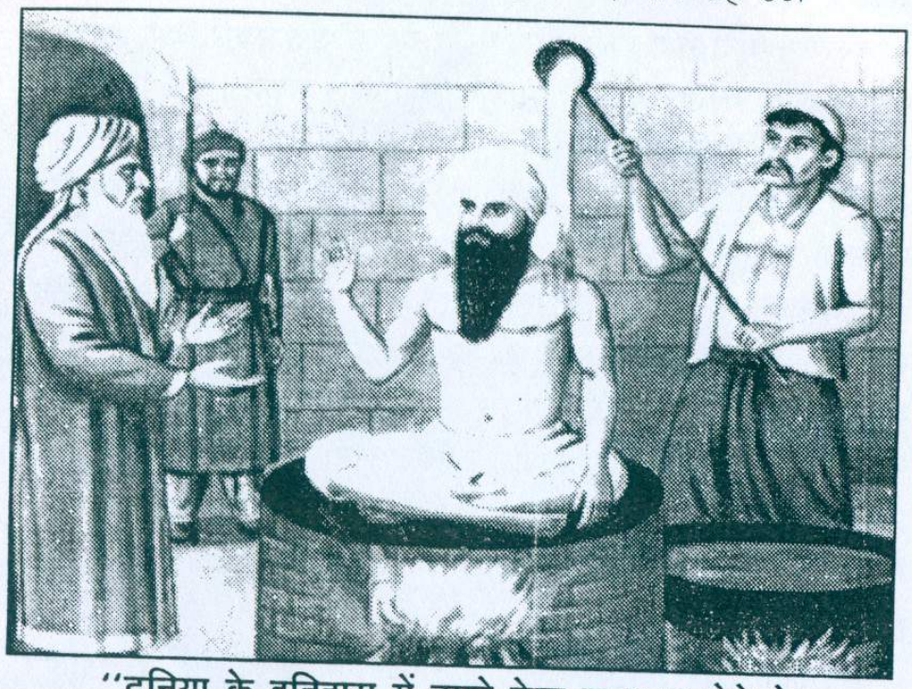

''दुनिया के इतिहास में हमने ऐसा जुल्म न होते देखा,
अग्नि शिखा के लाल तवे पर, अडोल बैठा संत न देखा!''

इस गुरूद्वारे के गुबंद सोने के मढ्ढे हुएं है ।

यही पर शहीद गजं थडा (चबूतरा) है । इस गुरूद्वारे में रोजाना श्री गुरू ग्रंथ साहिब का प्रकाश होता है । वक्फ बोर्ड की तरफ से दो सिख परिवार इस की देखभाल करते है ।

इसी किले के अंदर ही इसके साथ ही लगी दूसरी इमारत में **शेर.ए पंजाब महाराजा रणजीतसिंह** के पुत्र महाराज **दिलीप सिंहजी** तथा उनके

पौत्र **महाराजा नैनिहालसिंह** की समाधी बनी हुई है । मानो सिखो के गौरव मई इतिहास को उजागर कर रही हो ।

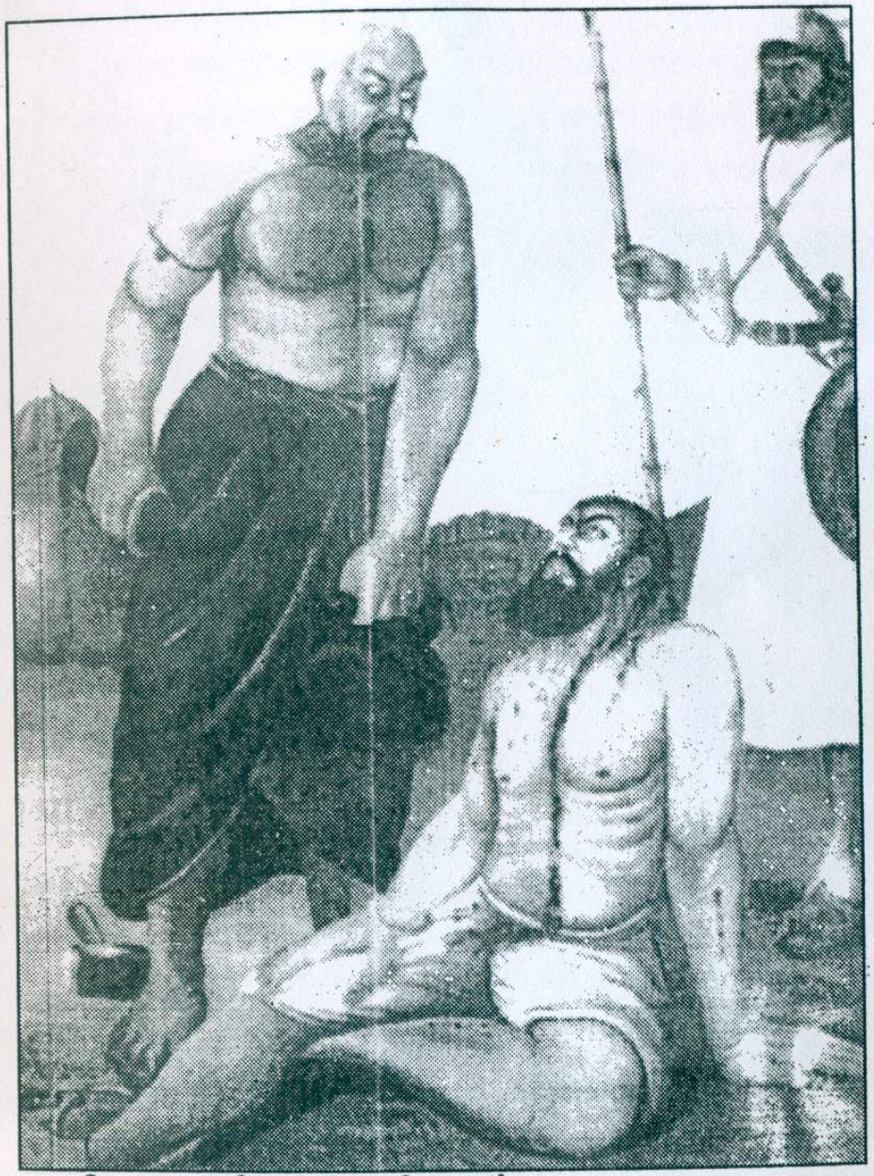

शहीदगंज भाई तारुसिंघजी (लाहौर) ...

इसी लाहौर शहर में इस गुरूद्वारे की कुछ दूरी पर लंडे बाजार मे शहीद गजं, शहीद भाई तारूसिंघ की समाधी बनी हुई है । जो सिख मर्यादा के

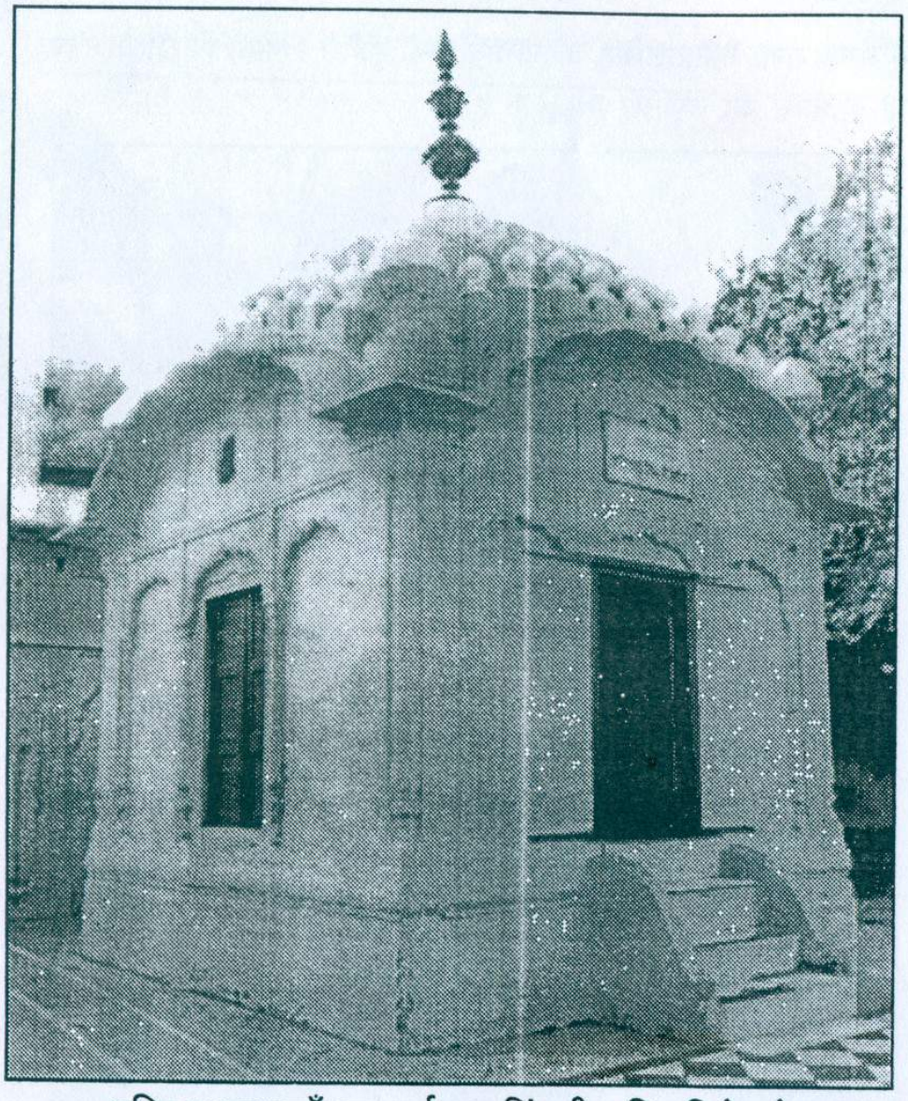

पवित्र स्थान जहाँ पर भाई तारूसिंघजी शहिद किये गये

नियमों को उजागर करती हुई, यह शहादत बता रही है कि, किस तरह अपने धर्म की मर्यादा को पालन करते हुए भाईतारूसिंघ ने केशों का अनादर न करते हुए केशों को न कटवाकर अपनी खोपडी रबियों से उतरवानी मंजूर की पर सिख धर्म पर आंच नहीं आने दी। जिसे रोज सिख प्रार्थना में उन शहीदों को श्रद्धांजली देता है। जिन सिघों ने प्राणों की बाजी लगाकर अपनी सिखी धर्म की पालना की।

गुरूद्वारा सिघनियां (लाहौर) ....

इसी के सामने सड़क की दूसरी ओर छोटा गुरूद्वारा सिघनियों का है इतिहास कारो का कहना है कि इस छोटे से गुरूद्वारे में करीब ढाईलाख बच्चे, बूढे, जवान और सिंघनियो को शहीद किया गया। सन १६७४ ईसवी में जब मियांमीर पंजाब का सुभेदार बना, तो उसने कसम खाई की मैं सिखों को खत्म करके आराम लूंगा। फिर क्या था, उसके हुक्म से चारो ओर से

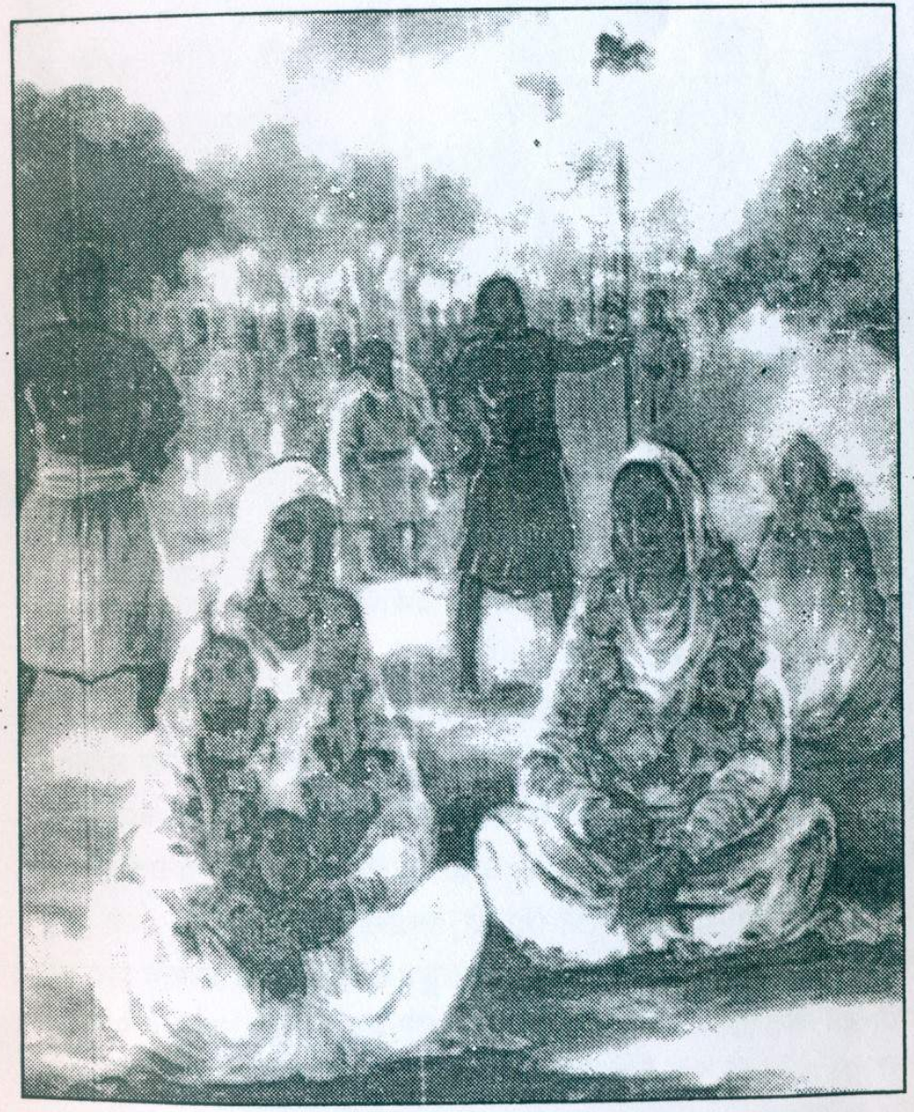

सिखो को गिरफ्तार करके शहीद किया जाने लगा । इसी गुरूद्वारे में एक तहखाना है जहा पर सिंघनियो (स्त्रीयों) को कैद कर आटा पिसाया जाता था। इस्लाम धर्म न स्वीकारने पर तथा अपना सिखधर्म न बदलने पर उन कैदी सिघिंनयो के बच्चों के टुकडे टुकडे कर हार बना कर उन धार्मिक सिख माताओं के गले पहनाया जाता था । इतना जुल्म सहकर भी सिघनीयों ने

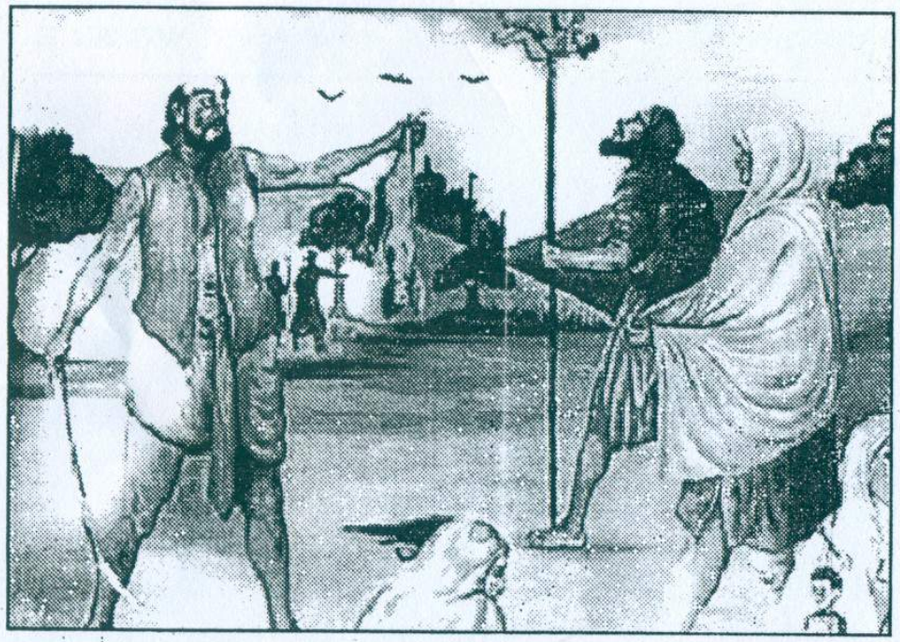

अपना धर्म नही छोडा । इसी स्थान पर पंजाबी की ये कहावत प्रसिद्ध हुई

"मनु साडी दातरी, असी मनु दे, सोये,
ज्यों ज्यों मनु वडदा असी दूने चौने होए"।

सूबेदार मनु ने सौगंध खाई कि मैं सिखों को खत्म करूंगा । पर रोजाना सिखो को शहीद करते करते थक गया, लेकिन सिख फिर भी खत्म नहीं हुए, बल्कि सिख शहीदों की संख्या बड़ती ही गई । वो बात मानो ऐसी हुई मनु मानो सिखो के लिये खुर्पी (दातरी) काटने का काम करने लगा और सिख मानो सौया (हरी सब्जी) बन गये । कुदरत का नियम ऐसा है जब हम सौयो को जड़ छोड कर काटते है तो उसकी पैदाइश बढ़ जाती है हुआ भी उसी प्रकार जैसे जैसे मनु सिघों को शहीद करता वैसे वैसे ही सिघों की

संख्या दिन दूनी रात चौगनी ही बढती गई ।

शहीदगंज भाई मनीसिंघजी

भाई मनीसिंघजी का बंद बंद काट कर शहीद करते हुए जल्लाद

भाई मनी सिंघ का शहीदी स्थान लाहौर किले के पीछे मस्ती दरवाजे के अंदर है । माता सुंदरी जी ने भाई मनीसिंघ को गुरूद्वारा अमृतसर के हरिमंदिर का ग्रंथी नियुक्त किया था । भाई मनीसिंघ जी गुरूगोबिंदसिंघजी के बाल मित्र थे ।एक दिन भाई मनी सिंघ जी ने सरकारी हुकुमत से इजाजत लेकर साधसंगत को इकट्ठा करके कुछ समाज सुधारलाने की योजना बनाई । पर जब उन्हे सरकारी साजिश का पता चला की हुकुमत इस इकठ को कत्ल कर देगी, तो उन्होने ये इकठा होना रहित (मना) कर दिया । बस इसी अपराध में हकुमत ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया । भाई मनीसिंघ को सिख धर्म को छोड़ने और इस्लाम धर्म स्वीकारने के लिये कई लालच दिये गये, पर भाई मनीसिंघ अपने धर्म पर अडिग रहे । सन १७२४ को उनके शरीर के टुकडे टुकडे (बंद बंद) काट कर शहीद कर दिया और

पास हीं में एक पुरातन कुँआं है, जिसमें शहीदो को डाल दिया गया ।

गुरूद्वारा जन्मस्थान गुरूरामदासजी :

ये पवित्र स्थान दिल्ली दरवाजा के अंदर चुना मंडी मे है सिखो के चौथे गुरू रामदासजी का जन्म सोढ़ी हरदास तथा माता दयाकौर की कोख से हुआ । गुरूजी का बचपना यही पर गुजरा । अपनी उम्र के सात साल तक गुरूजी यहाँ रहे । यहाँ पर श्री गुरूग्रंथ साहिब का प्रकाश नहीं होता ।

गुरूद्वारा पतिशाही छेंवी

श्री गुरू हरगोबिंद जी सन १६७९ में जब हत्यारे वजीर चंदू को यहाँ लाहोर मे लेकर आये, तो इसी स्थान पर ठहरे थे । यहीं पर गुरूजी लाहौर के काजी की लडकी बीबी कौलां जी का गुरू घर के प्रति श्रद्धा और प्रेम को देख कर साईं मिंया मीर के कहने पर बीबी कौलांजी को गुरू हरगोबिंद जी अपने साथ ले गये । ये पवित्र स्थान थाना भुजंग टेंपल के करीब है । इसी समय पर ही गुरू हरगोबिंद जी ने अपने पिता श्री गुरू अरजनदेव जी के शहीदी स्मारक बनाने की शुरूआत की थी ।

इन सभी गुरूद्वारो मे ये देखने में आया है कि सेवा भावी गुरूनानक नामलेवा भक्तो ने जो यहां सेवा का अनूठा नजारा दिखाया, जिसे देख कर उनकी भक्तिभाव के आगे हर यात्रीका नम्रता से सिरझुक जाता है । सेवा करने के लिये समय की कोई मर्यादा नही थी ।सेवादारों द्वारा दिन रा में चाय पानी पूरे २४ घंटे चालू थी । सेवादार, कब सोते है, कब क है समझ में नही आता । कैसी शक्ती इन्हे परमात्माने प्रदान की है। प्रकार के व्यंजन हमे खाने को मिले । एक ही गुरूद्वारे में नही बल्कि सभी गुरूद्वारों में । इन सेवादारो पर बलिहार जाये । इन सेवादारों ने तो हमे अपने प्यार के बंधनो मे बांध दिया था । इन की नम्रता सचमुच बड़ी सराहनीय है । ऐसे सेवादारो को मेरा कोटि कोटि प्रणाम।

अगर आज हम इन सज्जनो के बारे मे न लिखे तो हमारी पाकिस्तान क यात्रा का विवरण अधूरा ही रह जायेगा । ये है हमारे यात्रा के जत्थेदार सरदार रणबीरसिंघ दुग्गल तथा सरदार हरिमहिंदरसिंघ घई । जिन्होंने

हमें इन पवित्र गुरूधामों के दर्शन कराये । तथा एक वो हस्ती हैं जिन्होंने हमारे हृदय मे अपने प्यार की मोहर लगा दी है, वो है सिकंदराबाद के एम एल सरदार हजुरासिंघ जी जिन्होने कानून की सारी सीमाओं को पार करके पास पोर्ट की सबसे कठिन सेवा पूरी निष्काम भावना से की और हमें पाकिस्तान में जाने की मंजूरी के लिये, दिल्ली के कई बार चक्कर लगाये । सच कहा जाये तो इस पवित्र धर्ती के दर्शनो का सौभाग्य इन के परिश्रम द्वारा ही हमें प्राप्त हुआ है । इनका जितना भी मै धन्यवाद करूँ वह कम ही हैं । ऐसी महान हस्तीओं को मेरा शत् शत् प्रणाम ।

धन्यवाद !

तारासिंघ गोरोवाडा

***